विद्यावार्ता®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

SPECIAL ISSUE-2020 05

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

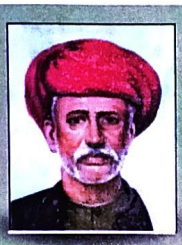

शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम व डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

यांच्या संयुक्त विद्यमाने

"राजर्षी शाहू, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान" या विषयावर

एक दिवसीय राष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद

प्राचार्य
डॉ.श्रीकृष्ण चंदनशिव

41) शाहु महाराज यांचे "जलव्यवस्थापन" विषयक विचार
प्रो. मधुकर तुकाराम क्षीरसागर. ता. जि. लातूर ||145

42) राजर्षी शाहू महाराजांचे महिला विषयक विचार आणि कार्य
प्रा.भोसले एस. ई., जि.बीड ||149

43) छत्रपती शाहु महाराजांचे जलव्यवस्थापन विषयक विचार व कार्य
प्रा.डॉ. रविंद्र दगडू वाघ, धुळे ||152

44) राजर्षी शाहु, म.फुले, डॉ.आंबेडकर यांचे शैक्षाणिक विचार
प्रा. डॉ. दादासाहेब गिऱ्हे, जालना ||155

45) छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक व शैक्षणिक कार्य
डॉ. शेख हुसैन इमाम, बीड ||157

46) शाहू, फुले, आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार
प्रा. शितोळे जे. एन., उ'बाद ||161

47) फुले, शाहू, आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार
प्रा. सुनिता शरद इंगळे & प्रा. कमलाकर शरद इंगळे, जि. जळगाव (महाराष्ट्र) ||164

48) राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार
डॉ. बी. पी. ठाकुर, अहमदनगर ||165

49) राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे शैक्षणिक विचार
प्रा. विनायक नथुराम तंत्रे, नांदेड ||168

50) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार : एक विश्लेषण
प्रा.डॉ. विवेक अ. चौधरी, जि. अमरावती ||171

51) म. जोतिबा फुले यांचे कृषी विषयक विचार:
प्रा. डॉ. यादव घोडके, जि. बीड ||174

52) फुले, शाहू, आंबेडकर के सामाजिक विचार
प्रा. डॉ. नितीन सुरेश माने, जि. जालना ||179

53) फुले, शाहु, आंबेडकर के सामाजिक विचार
प्रा. पवार एस. पी., जि. बीड ||182

http://www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

१०) कित्ता — पृ.क्र. २८७.

११) साळूंके श्रीकांत, महाराष्ट्रातील शेतकरी चळवळ, बी. रघुनाथ प्रकाशन परभणी, पृ.क्र. १८.

१२) धोंगडे केशव शंकर, हैद्राबाद मुक्ती लढयातील मन्याडखोरी विजयी कारगील शौर्यगाथा, पृ.क्र.७५.

१३) म. फुले समग्र वाङ्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, (संपा. धनंजयकीर, डॉ.स.ग. मालाशे. डॉ.य.दि. फडके) पृ.क्र. २८८.

१४) साळूंके श्रीकांत, महाराष्ट्रातील शेतकरी चळवळ — बी रघुनाथ प्रकाशन, परभणी, पृ.क्र. २०.

❑❑❑

52

फुले, शाहू, आंबेडकर के सामाजिक विचार

प्रा. डॉ. नितीन सुरेश माने
हिन्दी विभाग,
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय परतूर, ता. परतूर, जि. जालना

****

शाहू, फुले, आंबेडकर १९ वी शती में भारतवर्ष को मिली अद्वितीय देन है। जब भारतीय समाज विविध समस्याओं के जाल में जखडा हुआ था। देश में वर्ण व्यवस्था का साम्राज्य था। विशीष्ट वर्ग की मनमानी चलती थी। और सारा समाज विविध बाहयाडम्बरों, अंधविश्वास, कुरीतियों से भरा था। ऐसे भयानक काल में देश को, समाज को आवश्यकता थी किसी महात्मा की जों समाज का सही पथ प्रदर्शन करके, समाज को विकास की ओर उन्मुख कर सके। इसी आवश्यकता की पुर्ती फुले, शाहू और आंबेडकर जी ने की है।

इन महात्माओं ने समाज के पिछडे हुए लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागृत करके समानता से जीवन जीने की सिख दी है। इन्होंने भेदभाव, उच-निचता, छुआ-छुत, विधवा-विवाह, अंधविश्वास आदि कु प्रथाओं का निर्मुलन करके समाज को सहि दिशा में ले जाने का सराहनिय कार्य किया है।

महात्मा ज्योतिबा फुले एक ऐसी इकाई है जो समाज हित के लिए तुफान में दिया जलने जैसा है। फुले जी केवल समाजसुधारक ही नहीं क्रांतिकारक समाजसुधाकर थे। उन्होंने वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था को नष्ट करने के लिए सामाजिक, आर्थिक तथा राजकिय बदलाव लाने का प्रयास किया। फुले जी के विचार क्रांतिकारक थे जो उनकी चिकित्सकता का परिणाम था।

उमेश बगाडे कहतें है। "फुल्यांच्या या नैतिक बंडखोरीमागे व तर्करचनेमागे ..... भारतातील जातीविद्रोहाच्या अ-ब्राम्हणी परंपरेचे कोंदण होते. त्यांच्या व्यक्तीत्वात व विचारांमध्ये व्यक्तिस्वातंत्र्य, समता, बंधुता यांना पायाभूत मानणारा मानवी हक्काचा पाश्चात्य उदारमतवादी विचार अ-ब्राम्हणी परंपरेतून आलेल्या शूद्रातिशूद्रांच्या दास्यमुक्तिच्या ध्येयवादाशी एकरुप झाला होता."[१] फुले जी ने सामाजिक समता, बंधुता, मानवता

पर विशेष रुप से ध्यान दिया है। उनहोंने ब्राम्हणवादी वर्चस्व, विषमतासे भरी समाज व्यवस्था का कडा विरोध किया है।

"पेशव्यांच्या काळातील ब्राम्हण वर्चस्वाची स्थिती ब्रिटीश काळातही कायम राहिली. पराभूत ब्राम्हणवर्ग शिक्षणातील मक्तेदारीच्या आधारावर ब्रिटीशांच्या राज्यातही अधिकार रुढ झाला होता. मराठा सत्ताधारी निस्तेज होऊन कारभारातून बेदखल झाला होता. वासाहातिक रचनेत शुद्रातिशूद्र जनतेचे उत्पादक व ग्राहक असे दुहेरी शोषण सुरु झाले. शेतक-यांकडील जमिनी सावकारांकडे हस्तांतरीत होऊ लागल्या. सामाजिक, राजकीय, आर्थिक सत्तेची मक्तेदारी जुन्या व नव्या ब्राम्हण वर्गाकडे कायम राहिल्याने ग्रामीण भागातील शुद्रातिशूद्र शोषणात वाढच झाली."[२] ऐसे प्रतिकुल वातावरन में फूले जी ने जो कार्य किया है उसकी तुलना किसी के साथ नही हो सकती।

वर्तमान में फुले जी के सोचने - विचार करने की मूख्य दृष्टी को समझ लेना आवश्यक है। उच्चवर्णीय नेताओं ने फुलेजी की खुब अवहेलना की, अपमान किया। उनकी विचार धारा को समाप्त करने की कोशीश की पर हुआ उल्टा। फुले, सत्यशोधक समाज तथा उनकी विचारधारा को नष्ट करने का प्रयास तो बहुत हुआ पर नष्ट हुई उच्चवर्णीय, ब्राम्हणवादी विचारधारा।

महात्मा फुले जी नें शुरु से ही ब्राम्हण वर्चस्व का विरोध किया। "फुल्यांनी ब्राम्हण वर्चस्वाला प्रथमपासूनच आव्हान दिले. किंबहुना त्यांच्या सार्वजनिक जीवनाचा प्रारंभ त्या संघर्षापासूनच झाला आणि तो संघर्ष त्यांनी जन्मभर सतत चिकाटीने, हिरीरीने चालू ठेवला.... त्यांच्या लिखाणात, भाषणात, कार्यामध्ये या संघर्षाचे सूत्र सतत आढळते"[३]

फुले वर्णव्यवस्था निर्माता, ब्राम्हणों के विरोध में थे। वे जन्मजात उच-नीचता के विरोध में थे। "ब्राम्हणाकडे ज्ञानाची, शिक्षणाची नेतृत्वाची संपूर्ण मक्तेदारी चातुर्वण्याधिष्ठित हिंदू धर्माने कायमची दिलेली आहे; आणि इतरेजनांच्या, विशेषत: स्त्री, शुद्र - अतिशुद्रांच्या माथी कायमची गुलामगीरी, हीन, लाचार अवस्था लादलेली आहे. तोच त्यांचा धर्म आहे, त्यातच त्यांनी आपले भाग्य समजले पाहिजे, या भयानक धारणे विरुध्द फुल्यांचे सर्वंकष बंड होते, सर्वंकष युध्द होते."[४]

महात्मा ज्योतिबा फुले जी आधुनिक महाराष्ट्र के समाजपरिवर्तन के आद्य प्रवर्तक है। उन्होंने स्त्री शिक्षण, बालविवाह, विधवा विवाह, केशवपन जैसी महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया। "फुले यांनी न्याय व समता यावर आधारलेली आदर्श समाजरचना अस्तित्वात आणण्याचा ध्येयवाद सांगितला."[५]

ज्योतिबा फूले के समय तत्कालीन समाज अनेक बुराइयों, विसंगतीयों, अनिष्ठ प्रथा, रुढियों से भरा हुआ था। समाज जाति-भेद, भेद-भाव, उच-नीचता से ग्रस्त था। वर्णाश्रम पध्दती के कारण ब्राम्हण सर्वश्रेष्ठ माने जाते और बाकी उनके नीचे। शुद्रों कों तो समाज से ही बहिष्कृत किया गया था। वे न किसी के सामने बोल पाते थे, न चल पाते। उनका रहने का ठिकाना भी गाँव के बाहर था। शुद्रों को पीने का पाणी तक कुंये से लेना मना था। शिक्षा के सारे अधिकार ब्राम्हण वर्ग तक सीमीत थे। भारतीय समाज पितृसत्तात्मक होने के कारण। परिवार का कर्ता-धर्ता पुरुष ही रहता था, चाहे वह ब्राम्हण हो या शुद्र। सारे अधिकार पुरुष को थे। ऐसे में स्त्री ब्राम्हण परिवार की हो या शुद्र। स्त्री की स्थिती अती दयनीय थी। शुद्र परिवार की स्त्री के बारे में तो सोच के परे की बात थी। ऐसे हालात में फूलेजीं ने जो कार्य किया वह कल्पना के बाहर की बात थी।

फूले ने समाज की दशा को सुधारणे के लिए शिक्षा को प्राथमिकता दी थी। उनका मानना था कि समाज में सुधार लाना हो तो पहले लोगों को शिक्षा देकर सुशिक्षित करना होगा। इसलिए समाज की प्रथम ईकाई परिवार को उन्होंने केंद्र में रखकर परिवार की मूल स्त्री को मानकर, उसे शिक्षित बनाने का ठान लिया। उनका मानना था की, "घरातील स्त्री शिकली की कुटुंबात शिक्षणाचा प्रसार होईल ती शहाणी झाली की सबंध कुटुंब शहाणे होईल मग कुटूंबा - कुटूंबातून ज्ञानाची गंगा वाहत जाईल. विचारांचे प्रवाह खळाळत जाईल आणि सारा समाज जागृत होऊन पावन होईल."[६] फूले जी ने आयु के २१ वे वर्ष में ही १८४८ में लडकियों की पहली स्कुल पुणे के बुधवार पेठ, भिडे वाडा में शुरु की। यह भारतीय महिलाओं के लिए किया गया प्रथम प्रयास था। इस स्कुल में शुद्र, अतिशुद्र महिलाओं को प्रवेश दिया गया। इस प्रकार फूले ने महिला शिक्षा की निव डाली।

फुले कि विचार धारा को लेकर समाज का हीत करने वाला राजा राजर्षि शाहू महाराज। राजा होते हुए भी ऋषी जैसा जीवन यापन करनेवाला महान समाज सुधारक, पुरोगामी विचारों का वहन करने वाले राजर्षि शाहू महाराज के बारे में प्रभाकर वैद्य लिखते है, "... ते काही काळ अगदी झपाटले गेले आणि अनेक अभूतपुर्व सुधारणा त्यांनी धडाक्याने सुरु केल्या! त्यात बहुजन समाजाचे शिक्षण, त्यांना शाळांत बिनबोभाट प्रवेश, शिष्यवृत्त्या, वसतिगृहे इत्यादीं साठी आपली राज्यकर्त्याची सर्व शक्ती, अधिकार, साधन-सामग्री त्यांनी सर्वतोपरी उपयोगात आणली. उच्चवर्णीय अधिकाज्यांचा, कारभा-यांचा, शिक्षकांचा छुपा विरोध, असहकार

त्यांनी हाणून पाडला आणि एक प्रकारे बहुजन समाजाच्या सामुदायिक प्रमाणावरील शिक्षणाचा पाया घातला."[७]

शाहू महाराज ने एक ऐसा काम अपने जिम्मे लिया था, जो अस्पृश्य निवारन का था। यह कार्य करते समय उन्हें ब्राम्हनों, सफेदपोशों का ही नही बल्की सभी उच्चकुलोत्पन्न वर्ग का विरोध सहना पडा। शाहू जी ने अस्पृशों के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये। इतना ही नही उन्हे अलग-अलग जगहों से लाकर वस्तिगृह में एक जगह रखा, उनके लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध की। साथ ही इन लागों के लिए और एक बडा कदम उठाया अस्पृश्यों को नोकरियों में प्रवेश दिलाया। "सरकारी - निमसरकारी नोकज्यामध्ये अस्पृश्यांना स्थान मिळावे म्हणून व्यक्तिश: लक्ष घालून, विरोध मोडून काढून त्यांनी प्रयत्न केले. स्वत:च्या अगदी खासगी नोक-यांत अस्पृश्यांना स्थान दिले!"[८]

छत्रपती शाहू महाराज ने समाज के उन अस्पृश्यों को पहली बार अपने संस्थानी समारोह में शामील होने का अवसर दिया। उनके दरबार में माहुत, सारथी तथा निजी कार्यों के लिए अस्पृश्य लोगों को चूना। उनके इस कार्य से उन्हें संपूर्ण भारतवर्ष में पुजा जाता है। राजर्षि शाहू महाराज ने शिक्षा, जातिभेद निर्मूलन के लिए अतुलनिय कार्य किया। सच कहा जाय तो उन्होंने फूले की सामाजिक क्रांति की विरासत को आगे चलाया।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर फुले जी को अपना गुरु मानते थे तथा उनकी विचार धारा को ही आंबेडकरजी ने आगे चलाया। आंबेडकर जी एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व है। उन्हें भारतरत्न, विश्वरत्न की उपाधियों से सम्मानित किया गया है। डॉ. आंबेडकरजीने समाज, समाज के उपेक्षित - शोषित लोगों के लिए जो कार्य किया वैसा विश्व में किसी ने नही किया। उन्होंने भारतीय संविधान बनाकर देश के दीन-दलित, उपेक्षित, सर्वहारा मजदूर, किसानों, महिलाओं को न्याय दिया है।

महिलाओं की उन्नती हो इसलिए उन्होंने संविधान द्वारा 'हिंदू कोड बील' के माध्यम से संरक्षण दिया है। "हिंदू समाजात अनादी कालापर्यंत स्त्रियांचे स्थान क्षुद्रासारखेच खालच्या दर्जाचे होते. मग त्या स्त्रिया उच्चवर्णिय असल्या तरी त्यांच्यात फरक नव्हता. स्त्री ही परंपरेने पुरुष वर्गाची गुलाम होती. तिला या गुलामगिरीतून मुक्त करण्याचा प्रयत्न महात्मा फुले यांच्यानंतर ज्या समाजसुधारकांनी केला त्यात आंबेडकरांचे स्थान अतिशय महत्वाचे आहे."[९] आंबेडकरजीने 'हिंदू कोड बील' द्वारा महिलाओं के लिए वारसा हक्क, पिता की जायदाद में हिस्सा, धार्मिक विवाह को पंजीकरण विवाह में रुपांतरन, पुरुषों की तरह महिलाओं को भी पुनर्विवाह का अधिकार, कानूनन तलाक लेने का अधिकार दिया।

डॉ. आंबेडकर ने अपने 'द राईज ॲण्ड हिन्दू वूमन' रचना में हिंदू महिलाओं का आदिकाल से हो रहा शोषण को व्यवस्थित रुपसे दर्शाया है। हिंदू धर्म ने शुद्रों के साथ महिलाओं को भी मानवी अधिकारों से दूर रखा था। 'मनुस्मृती' महिलाओं के लिए कितनी हानिकारक है यह बताकर महिलाओं को सचेत किया है।

जिस प्रकार फुलेजी ने समाज के विकास के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानकर स्कुल - कॉलेज शुरु किये उसी प्रकार आंबेडकरजी ने भी भारतीय समाज के संपूर्ण विकास के लिए शिक्षाको केंद्र में रखकर दीन - दलित, महिलओं की शिक्षा के लिए उन्होंने १९२४ में बहिष्कृत हितकारीनी सभा की स्थापना करके उसके द्वारा अछूतो के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय, प्रौढों के लिए स्कूल शुरु किए। १९४६ में आंबेडकरजीने 'पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी' की स्थापना करके मुंबई में सिध्दार्थ महाविद्यालय तथा औरंगाबाद में मिलिंद महाविद्यालय की स्थापना की। सर्वहारा वर्ग की उन्नती के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। इसलिए उन्होंने उन लोगों में शिक्षा के प्रसार को महत्व दिया।

अस्पृश्यता निवारन को लेकर लंडन में 'गोलमेज परिषद' का आयोजन १९३० में किया गया था। इस परिषद के लिए आंबेडकर को अस्पृश्यों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। १२ नवंबर १९३० को गोलमेज परिषद शुरु हुई, जिसमें आंबेडकरजी ने पहली बार अस्पृश्यता की समस्याओं को दूनिया के सामने पहली बार रखा। "परिषदेचे तीनही अधिवेशने संपल्यानंतर ब्रिटिश सरकारने अस्पृश्यांना स्वतंत्र मतदार संघ देण्याचे व त्याच बरोबर सर्वसाधारण मतदार संघामध्ये ही अस्पृश्यांना मताधिकार देण्याचे घोषित केले."[१०] परिषद में आंबेडकरजी ने गरिबों को, अस्पृश्यों को भारतीय समाज के अन्य लोगों की तरह सभी अधिकार एवं हक्क प्राप्त कराने की माँग रखी। इतना ही नही उनके लिए स्वतंत्र मतदार संघ एवं मतदान का अधिकार की बात को बढाया। परिणाम स्वरुप परिषदने ये माँग पुरी की।

निष्कर्षत: उक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि फुले, शाहू, आंबेडकरजी नें शुद्र कही जानेवाली जातियों को समाज के प्रवाह में लाकर, उन्हें शिक्षित बनाकर, उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराकर जीवन जीना सिखाया। इन महात्माओं ने समाज के लिए जो कार्य किया है वह अतुलनीय है। इनका यह कार्य देश के लिए ही नही विश्व की सभी मानव जातियों के लिए एक प्रेरणा स्थान बन चुका है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१, २, ३, ४, ८) महात्मा फुले आणि त्यांची परंपरा - प्रभाकर वैद्य

५, ६, ७) आधूनिक महाराष्ट्राचा इतिहास - प्राचार्य डॉ. एस. एस. गाठाळ

९, १०) महाराष्ट्रातील समाज सुधारक - प्रा. डॉ. सतीश ठोंबरे